एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आइये जाने कैसे करे हल्दी का खेती

(*पूनम[1], मनीषा वर्मा[1], डॉ. एस. एस. लखावत[2] एवं डॉ. सुभिता कुमावत[3])
[1]रिसर्च स्कॉलर, महाराणा प्रताप कृषि एवम् प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
[2]आचार्य, महाराणा प्रताप कृषि एवम् प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर
[3]सहायक आचार्य, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
* pk959753@gmail.com

भारत को इतिहास के शुरुआती दौर से ही "दुनिया का मसाला कटोरा" और "मसालों की भूमि" के रूप में जाना जाता है। भारतीय मसालों का इतिहास मानव सभ्यता की शुरुआत का है । मनु (4000 ईसा पूर्व) द्वारा वेदों (6000 ईसा पूर्व) में भारतीय मसालों और उनके उपयोग के बारे में कई संदर्भ हैं । हल्दी एक मसाला वाली फसल है । हल्दी में जैवनाशी और प्रतिरोधी दोनों गुण होते हैं और बैक्टीरिया को नष्ट करती है । यह औषधीय गुण के साथ–साथ अति प्राचीन काल से ही सभी मंगल कार्यो के लिए भी प्रयोग की जाती है । इसमें सौन्दर्य प्रसाधन के गुण भी पाये जाते है जिसके कारण हल्दी का प्रयोग सौन्दर्य उत्पाद बनाने में किया जाता है । हल्दी का पीला रंग करक्यूमिन के कारण होता है इसमें ओलिओरेजिन भी पाया जाता है ।

हल्दी की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी एवं जलवायु

इसके लिए अच्छी जल निकासी वाली रेतीली या चिकनी दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है । मृदा का पी.एच. मान 5–7.5 होना चाहिए । अधिक कार्बनिक पदार्थों वाली मृदा हल्दी के लिए बहुत अच्छी होती है । जलभराव वाली मृदा अनुपयुक्त होती है क्योकि जलभराव से कंद में सड़न शुरु हो जाती है । इसका तापमान 20–30 डिग्री सेमी. के बीच होता है और वार्षिक वर्षा 1500 मिमी और अधिक होती है ।

हल्दी की खेती के लिए बुवाई का समय

हल्दी लगाने का उपयुक्त समय अप्रैल और मई है । जिन इलाकों में सिंचाई की सही सुविधा नहीं होती है, वहां पर मानसून की शुरुआत में यानी जुलाई के दौरान भी इसकी खेती की जाती है। अगर आपके खेत में पानी निकासी की अच्छी व्यवस्था है तो अगस्त मध्य तक भी इसकी बिजाई की जा सकती है ।

हल्दी के खेत की तैयारी और बुवाई की विधि और प्रकंद की मात्रा

खेत की बुवाई से पहले मिट्टी को भुरभुरा बनाने के लिए 4–5 बार जुताई कर पाटा लगाकर समतल कर लेना चाहिए । फसल से पहले के अवशेषों को अलग कर देना चाहिए । हल्दी की बुवाई के लिए 15 सेमी. ऊंची, एक मीटर चौडी और सुविधाजनक रूप से लंबे बेड तेयार करते है । खेत में नेमेटोड की समस्या होने पर प्लास्टिक सोलराइजेशन अप्रैल माह में ही कर लेना चाहिए । उसके बाद ही क्यारियों का निर्माण करना चाहिए । प्रकंद से हल्दी लगाई जाती है, जिसमें प्रति हेक्टेयर 20 से 25 क्विंटल प्रकंद का उपयोग किया जाता है। प्रत्येक प्रकंद में कम से कम 2 से 3 आंखें होनी चाहिए । प्रकंदों को 0.5 ग्राम मेन्कोजेब के घोल में कम से कम 30 मिनट के लिए डुबोकर उपचारित करते है । सड़े और सूखे और अन्य रोगों से प्रभावित प्रकंदों को छाँटकर अलग कर देना चाहिए । रोपण की दूरी 30 सेमी. कतार से कतार तथा 20 सेमी. पौधे से पौधे की दूरी रखते है । बीज के रूप में केवल मातृ प्रकंद का ही प्रयोग करना चाहिए।

हल्दी के खेत की सिंचाई

हल्दी की फसल को 20–25 हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है । गर्मियों में 7 दिन के अंतराल पर और सर्दियों में 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए ।

खाद, उर्वरक, मल्चिंग और अन्तराशस्य गतिविधियां

हल्दी की फसल को जैविक खाद की बहुत आवश्यकता होती है । 25 टन खाद या गोबर की सड़ी हुई खाद प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिलाना चाहिए । रासायनिक उर्वरक नाइट्रोजन 60 किग्रा, फास्फोरस 30 किग्रा और पोटाश 90 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से देना चाहिए । फास्फोरस की पूरी मात्रा और पोटाश की आधी मात्रा बुवाई के समय मिट्टी में मिलाना चाहिए । नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के 45 दिन बाद तथा शेष आधी नत्रजन व पोटाश 90 दिन बाद मिट्टी में मिलाते समय डालना चाहिए ।

तीन से चार बार निराई–गुड़ाई की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसे गर्मियों में लगाया जाता है । जिसके कारण बहुत अधिक पानी देना पड़ता है, जिससे खरपतवार बहुत अधिक उगते हैं । अक्टूबर के बाद भी सिंचाई की जाती है, जिससे उत्पादन अच्छा रहता है।

हल्दी की मिश्रित खेती या अंतरवर्ती

इसे या तो शुद्ध फसल के रूप में या नारियल, सुपारी और कॉफी के बागानों में मिश्रित फसल के रूप में उगाया जाता है । इसे विविध उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों में उगाया जा सकता है । मैदानी इलाकों में इसे मुख्य रूप से सब्जी फसलों में मिर्च और अन्य फसलों के साथ मिश्रित फसल के रूप में लगाया जाता है । इसे अरहर, सोयाबीन, मूंग एवं उड़द की फसलों के साथ भी लगाया जा सकता है। आम, कटहल, अमरूद, चीकू, केले की फसल जैसे बगीचों में अंतरवर्ती के रूप में अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

फसल की खुदाई

हल्दी की फसल 7 से 10 महीने में पक जाती है । यह बोई गई प्रजातियों पर निर्भर करता है । आमतौर पर खुदाई जनवरी और मार्च के बीच की जाती है जब पत्तियाँ पीली होकर ऊपर से सूखने लगे । खुदाई करने से पहले खेत का परीक्षण करके रोगग्रस्त पौधों को अलग कर देते हैं । और बाकी को एक अलग वर्ष के बीज के लिए रख देते है या बाजार में बेच देते है ।

हल्दी से बने उत्पाद

1. हल्दी पाउडर मसाले के रूप में प्रयोग किया जाता है।
2. हल्दी का तेलः– हल्दी में 3 से 5 प्रतिशत तक वाष्पशील तेल होता है जिसे भाप आसवन विधि द्वारा निकाला जाता है । इसे हल्दी पाउडर से निकाला जाता है । 8 से 10 घंटे में तेल धीरे–धीरे बाहर आ जाता है ।
3. हल्दी ओलियोरेजिन :– इसे विलायक निष्कर्षण विधि द्वारा निकाला जाता है। इसकी कीमत करक्यूमिन की मात्रा पर निर्भर करती है ।

हल्दी का प्रयोग

1. भोजन में सुगंध और रंग लाने के लिए तथा अचार आदि खाद्य पदार्थों में किया जाता है । यह भूख बढ़ाने और अच्छे पाचन में मदद करता है ।
2. इसका उपयोग रंगाई के काम में भी किया जाता है।
3. औषधियों में भी प्रयुक्त होता है।
4. इसका उपयोग सौन्दर्य संबंधी सामग्री बनाने में भी किया जाता है।

AGRI ARTICLES
Publishing Skills...
E-Magazine for Agricultural Articles
(www.agriarticles.com)